प्रातःक्लास 13-4-68 ओमशान्ति "शिवबाबा और वर्सा याद है?"

ओमशान्ति। अभी बच्चों के दो क्लास होते हैं यह अच्छा है। एक याद की यात्रा, जिससे पाप कटते जावेंगे। आत्मा पवित्र बनती जावेगी। दूसरा क्लास फिर होता है ज्ञान का। ज्ञान भी सहज है। कोई डिफीकल्ट नहीं। तुम्हारे सेन्टर और यहां में फर्क रहता है। यहां तो बाप बैठे हैं और बच्चे हैं। यह मेला है बाप और बच्चों का। और तुम्हारे सेन्टर में मेलालगता है बच्चों का आपस में। इसलिए बच्चे सम्मुख आये हैं। भल याद करते हैं परन्तु तुम सम्मुख देखते हो। तुम्ही से बैठूं, तुम्ही से बात-चीत करूं, खेलूं। बाप ने समझाया है। बाप और बच्चों की एक्टवीटी में फर्क है। खयाल करो इस बाबा का पार्ट क्या है, और रथ का पार्ट क्या है। क्या बाबा रथ द्वारा खेल सकते हैं। हां, खेल सकते हैं। जब कहते हैं तुम्हीं से खाऊं बैठूं- खेलूं ..... ऐसे नहीं तुम्हीं से खाऊं। क्योंकि वह खुद तो खाते नहीं। बच्चों साथ खुलना कुदना वह तो खुद सकते हैं। जैसे दोनो खेलते हैं। करते तो सभी कुछ यहां ही हैं तुम्हारे साथ। क्योंकि सुप्रीम टीचर भी है। टीचर का तो काम है बच्चों को बहलाना। इनडोरगेम होते हैं ब्रह्मा ना। आजकल तो गेम्स भी बहुत निकल गये हैं। भिन्न2 प्रकार के। सभी से नामी-ग्रामी है चौपड़ का खेल। जिसका महाभारत में भी वर्णन है। परन्तु वह जूआ के रूप में है। जुआ वाले पकड़ते हैं। एक जुआ होती है गवर्मेन्ट की पास की हुई। जैसे रेस है। उसमें भी बहुत दिवाला मार देते हैं। अभी यह भी भक्ति मार्ग से उल्टी रसम निकली है। पैसे से खेलना जुआ कहते हैं। उनको बन्द नहीं कर सकते। गवर्मेन्ट भी है अनलाफुल। बाहर में जो खेलेंगे उनको जूआ का रूप दे देंगे। क्लब में खेलेंगे तो उनको जूआ का रूप नहीं देंगे। ऐसे बहुत क्लब हैं जहां हजारों की जूआ होती है। नेपाल में जूआ के तीन दिन मुकर्रर होते हैं। खास एलान निकलता है जूआ ही जूआ। राजे-राजवारे सभी जूआ खेलते हैं। यह आया कहां से? महाभारत से। दिखाते हैं दाव लगाया। स्त्री का दाव सच्च2 लगाते हैं। बाबा अनुभव से सुनाते हैं। कहते हैं तुम जीता तो हमारी स्त्री तुम्हारे पास, अगर हमने जीता तो तुम्हारी तुम्हारी स्त्री हमारे पास। यह सभी भक्ति मार्ग के, जिसको पुस्तक कहते हैं उन से बातें निकाली है। मनुष्यों को तो पता नहीं हैं। अभी तुम जानते हो भक्ति मार्ग यह सभी झूठा मार्ग है। झूठ ही झूठ है। पूजा भी झूठी। सच्च तो तब हो जब उनको जानते हो। नहीं तो झूठ ही झूठ है। जिसको अन्धश्रधा ब्लाईन्ड-फेथ कहा जाता है। अभी यह तुम ही सुनते हो। साधू सन्त आद कभी नहीं कहेंगे कि यह ब्लाइन्ड-फेथ है। गाया भी जाता है अन्धे के औला अंधे। भक्ति मार्ग में है ही अन्धश्रधा। वर्त-नेम आद सभी भक्तिमार्ग के बातें हैं। 7-7 रोजनिर्जल रहते हैं। खाना भी नहीं खाते। इसको तो हठ कहेंगे ना। प्राप्ती कुछ भी नहीं। अगर भक्ति मार्ग में प्राप्ती होती भी है तो अल्प काल लिए। यहां तो तुम बच्चों को सभी कुछ समझाया जाता है। भक्ति-मार्ग को कहा ही जाता है धक्का खाने का मार्ग। ज्ञान का मार्ग है सुख का मार्ग। तुम जान गये हम सुख का वर्सा बाप से ले रहे हैं। इसलिए भक्ति मार्ग में भी याद करना चाहिए एक को। एक की ही पूजा अव्यभिचारी पूजा है। वह फिर भी अच्छी है। सतो रजो तमो तो होते हैं ना। भक्ति में भी सतो रजो तमोगुणी होते हैं। सब से ऊंच ते ऊंच सतोगुणी है शिव बाबा की भक्ति। शिवबाबा ही आकर सुखधाम बच्चों को ले जाते हैं। उस बाप को ही ऋषि-मुनि आद कोई भी नहीं जानते। आरफन्स हो गये हैं। रचयिता बाप को और रचना के आदि मध्य अन्त को कोई नहीं जानते तो आरफन्स ठहरे ना। इनको कहा जाता है आरफन दुनिया। आरफन उनको कहा जाता है जो बाप को नहीं जानते हैं। यह तो बाप समझ कर भी पत्थर-ठिकर-भितर में कुत्ते बिल्ले सब में कह देते हैं। कितनी ग्लानी है। कहते भी हैं यदा यदाहि धर्मस्य ..... परन्तु अर्थ को नहीं जानते हैं। भगवानुवाचः, तुम ने हमारी बहुत ग्लानी की है। सब से जास्ती मेरी ग्लानी की है। जो सब से जास्ती बच्चों की सेवा करते हैं। पावन बनाते हैं। उनको पुकारते भी हैं फिर कहते हैं ठिकर, भितर में। इसको कच्ची बाली कहा जाता है। एक दो को कहते भी हैं उल्लू का बच्चा। या तो कहेंगे तुम्हारी बुधि तो जैसे ठिकर-भितर है पत्थर बुधि है। भल कितने भी शाहुकार है परन्तु यह सभी हैं अल्प काल लिए। यह तो सभी खलास हुये पड़े हैं। तुम बच्चों को बेहद के बाप द्वारा

राज-भाग मिला था। फिर मिलना है जरूर। तुम ज्ञान को अलग भक्ति को अलग समझते हो। राम-राज्य और रावण-राज्य कैसे चलता है यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। इसलिए पत्रे आद भी छपाते रहते हैं। क्योंकि मनुष्यों को सच्ची समझानी भी चाहिए ना। तुम्हारा सभी कुछ है सच्च। बाकी सभी हैं कूड़ कुड़ (झूठ) सच्च और झूठ बिलकुल अलग है। इसलिए तुम पर्चों में भी छपाते हो। यह तो प्रश्न बनी है उन से पूरी सर्विस करनी चाहिए। सर्विसतो बहुत है। यह बैज ही कितना अच्छा है। सब से बड़ा शास्त्र है यह बैज। अभी यह है ज्ञान की बातें। इसमें समझाना पड़ता है। वह याद की यात्रा अलग है। उसको कहा जाता अजपा-जाप। जपना कुछ भी नहीं है। अन्दर में भी शिव शिव नहीं कहना है। सिर्फ बाप को याद करना है। यह तो जानते हो शिव बाबा बाप है। हम आत्माएं उनके सन्तान हैं। वही समुझाकर कहते हैं मैं पतित-पावन हूं। मैं कल्प2 आता हूं पावन बनाने। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ अपने बाप को याद करो। तो तुम पावन बन जावेंगे। मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। यह है बुधि का योग अथवा संग बाप के साथ। संग से रंग लगता है ना। कहा जाता है संग तारे कुसंग बोरे। बाप से बुधि योग लगाने से तुम पार हो जाते हो। फिर उतरने शुरू कर देते हैं। इनके लिए कहा जाता है सत का संग तारे। इसका अर्थ भी भक्ति मार्ग वाले नहीं जानते। तुम समझते हो। हमारी आत्मा पतित हैं। वह पावन साथ बुधि का योग लगाने से पावन बनते हैं। आत्मा को परमात्मा को याद करना पड़ता है। जब आत्मा पवित्र बन जाती है तब शरीर भी पवित्र बनती है। सच्चा सोना बने। यह है याद की यात्रा। योग अग्नि। जिस से विकर्म भस्म होते हैं। खाद निकलती जाती है। तुम जानते हो सतयुग नई दुनिया में हम पवित्र सम्पूर्ण निर्विकारी थे। 8 16 कला सम्पूर्ण थे। अभी कोई कला नहीं रही है। इसको कहा जाता है राहू का ग्रहण। सारी दुनिया खास भारत पर राहू का ग्रहण लगा हुआ है। तत्व भी काले हैं। जो कुछ भी तुम इन आंखों से देखते हो सब काले ही काले हैं। ल० ना० राम सीता आद की आत्माएं भी काला है इस समय। यथा राजा रानी तथा प्रजा.. श्याम सुन्दर का अर्थ भी कोई नहीं जानते। कितने नाम मनुष्यों के रख देते हैं। अभी बाप ने आकर अर्थ समझाया है। तुम ही पहले सुन्दर थे फिर श्याम बने हो। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से तुम सुन्दर बन जाते हो। फिर भी यह बनना है: श्याम से सुन्दर, सुन्दर से श्याम। उनका अर्थ भी बाप ने तुम आत्माओं को समझाया है। हम आत्माएं एक बाप को ही याद करती हैं। बुधि में आ गया है हम बिन्दी है। इसको कहा जाता है आत्मा की रियलाईजेशन। फिर देखने लिए इनसाईट। देखना वा न देखना। यह तो समझने की बातें हैं। आत्मा को समझाना है। मैं आत्मा हूं। यह मेरा शरीर है। हम यहां शरीर में आकर पार्ट बजाती हैं। पहले2 हम आते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार। आत्माएं तो सभी हैं। कोई में पार्ट कितना है कोई में कितना है। यह बड़ा भारी बेहद का नाटक है। इसमें नम्बरवार कैसे आते हैं, कैसे पार्ट बजाते हैं यह भी तुम जानते हो। पहले2 देवी देवता धराणा है। यह नालेज अभी तुमको है। इस पुरुषोत्तम संगम युग पर। बाद में फिर भी कुछ याद न रहेंगे। बाप खुद कहते हैं यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। किसको भी पता नहीं है कि देवी देवता धर्म की स्थापना कैसे हुई। चित्र तो है। वह कब कैसे स्थापन हुआ किसको भी पता नहीं है। तुम बच्चों को पता है। फिर तुम औरों को आप समान बनाते हो। बहुत हो जावेंगे। तो जरूर मकान भी बड़ा बनाना पड़ेगा। लाऊड स्पीकर भी रखना पड़ेगा। कोई जरूर युक्ति निकलेगी। बहुत बड़ी हाल भी दरकार नहीं। आवाज़ तो बहुत दूर तक जाकर सुन सकते हैं। इसमें रीड़ियां भी नहीं मारनी होती है। जैसे कल्प पहले जो स्थट की थी वही फिर होंगे। यह समझ में आता है। बच्चे वृधि को पाते रहेंगे। उनके लिए बहुत बनाना पड़ेगा। बाबा ने समझाया था शादी के लिए जो हाल बनाते हैं उनको भी समझाओ। यहां भी शादी के लिए धर्मशाला बना रहे हैं। कोई अपने कुल के होंगे तो झट समझ जाते हैं। कोई नहीं है। जो इस कुल के न होंगे वह विघ्न डालेंगे। जो इस कुल के होंगे वह मानेंगे यह सत्य

कहते हैं। हम क्या करते हैं। यह तो हम खून खूनकराने लिए प्रबन्ध देते हैं। जो इस धर्म के न होंगे वह लड़ेंगे। यह तो रम बली आ रही है। यह जानते ही नहीं पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी अपवित्र प्रवृति मार्ग है। फिर बाप आये हैं पावन बनाने। ट्रस्टीयों का भी झगड़ा चल पड़ता है। कोई कहेंगे देना चाहिए। कोई कहेंगे नहीं। तुम्हारा धंधा ही झगड़े का है। क्योंकि तुम प्युरिटी पर जोर देते हो। कितने विघ्न पड़ते हैं। आगा खां है कितना उनका मान है। पोप का भी कितना मान है। तुम जानते हो पोप क्या करते हैं। लाखों-करोड़ों शादियां कराते हैं। बहुत शादियां होती है। पोप आकर हथियाला बांधते हैं। इस पर वह लोग इज्जत समझते हैं। तुम कहेंगे यह तो खूनी नाहक का धंधा करते हैं। महात्माओं को भी शादी पर मंगाते हैं। आजकल सगाई भी करते हैं। बाप तो कहते हैं काम महाशत्रु है। यह आर्डिनेन्स निकालना मासी का घर नहीं है। कोसखाना बन्द करना समझाना है। बड़ी युक्ति चाहिए समझाने की। आगे चल कर आस्ते2 समझते जावेंगे। आदी सनातन हिन्दु धर्म वाले जो हैं उनको पकड़ो। वह झट समझ जावेंगे कि बरोबर आदी सनातन देवी देवता धर्म था कि हिन्दु। जैसे तुम बाप द्वारा जान गये हो। वैसे और भी समझ कर वृधिको पाते रहेंगे। यह भी पक्का निश्चय है। यह कलम लगता जावेगा। कलम लगते2 ताकिआदी सनातन देवी देवताधर्मवाले ही बन जावेंगे। ड्रामा अनुसार। तुम बाप की श्रीमत पर यह देवता बनते हो। यह हैं नईदुनिया में रहने वाले। पहले तुमको यह थोड़े ही मालूम था कि बाप संगम युग पर हमको ट्रन्सफर करेंगे। जरा भी पता नहीं था। अभी तुम समझते हो सच्चा2 पुरुषोत्तम संगम युग इसको कहा जाता है। हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। अभी जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना बनेंगे। हरेक को अपने दिल से पूछना है। स्कूल में जब सबजेक्टस में कच्चे होते हैं तो समझ जाते हैं हम नापास होंगे। यह भी स्कूल है। गीता पाठशाली मशहुर है। फिर उनका नाम थोड़ा फिराये दे दिया है। तुम लिखते हो सच्ची गीता, झूठी गीता। तो भी बिगड़ेंगे जरा खिट2 होगी। इसमें डरने की भी बात नहीं। पहले भी कितने विघ्न डाले थे। आग लगाते थे। आजकल तो यह सब करते रहते हैं। फैशन पड़ गया है। बसों को जलाना, आग लगाना, यह सब कहांसे सीखे हैं? बापू से। जिसने जो सिखाया वही सीखे हैं। आगे से भी जाती। सभी पिकेटिंग आद करते रहते हैं। गवर्मेन्ट को भी घाटा पड़ती है तो हर बर्थ टैक्स आद बढ़ाती जाती है। एक दिन बैंक के खाने आद सभी खुलवावेंगे। अनाज आदके लिए भी जांच करते हैं। कहां सस्ती तो नहीं रखा है। इन सभी बातों से तुम छूटे हुये हो। तुम्हारे लिए है ही मुक्ति आद की यात्रा। बाप कहते हैं मेरा इन बातों से कोई वास्ता नहीं है। मेरा तो सिर्फ काम है रास्ता बताना। तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। इस समय तुम्हारा कर्मों का हिसाब किताब चकतु होता है। डरना न है। विकार में भी मनुष्यों को भगवान की याद दिलाई जाती है ना। तुम हास्पीटल में भी जाकर नालेज दो। तो 2। जन्म लिए कब रोगी नहीं बनेंगे। दुःख में सभी भगवान को याद करते हैं ना। तो अभी एक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। सिर्फ इस जन्म की बात नहीं। भविष्य 2। जन्मों के लिए गारन्टी करते हैं। बाप को याद रखने से आयु भी बढ़ेगी। भारत की आयु बड़ी थी। निरोगी थे। अभी बाप तुम बच्चों को श्रीमत देते है श्रेष्ठ बनाने लिए। पुरुषोत्तम अक्षर तो कब भूलो नहीं। कल्प2 तुम ही बनते हो। ऐसे और कोई कभी न सके। तो ऐसे2 सर्विस बहुत कर सकते हैं। कोई भी समय टाईम ले सकते हो। नौकरी करने वाले भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। मरीजों को बोलो हमारा भी बड़ा डाक्टर है अविनाशी वेहद के सर्जन के हम बने हैं जिससे हम 2। जन्म निरोगी बनते हैं। हेल्थ मिनिस्टर आद को भी समझाओ। तुम हेल्थ के लिए इतना माथा मारते हो। सतयुग में तो तुम बहुत कम थे। शान्ति-सुख-पवित्रता थी। सारी दुनिया में तुम ही सभी का कल्याण करने वाले हो। तुम पण्डे हो ना। पाण्डव सम्प्रदाय। किसकी बुधि में नहीं होगा पाण्डव कौन थे। फूडमिनिस्टर को भी समझा सकते हो। पहले2 सब से बड़ा फूडमिनिस्टर तो है शिव बाबा। इतना अनाज देते हैं जो बात मत पूछो। कब खूट न सके। अभी तो भारत कितना इनसालवेन्ट बन गया है। पुराना देश गरीब देख उनको मदद करते हैं। अकल वाले आकर उनको सिखलाते रहते हैं। अभी तुम संगम युग पर हो। बक्र तुम्हारी बुधि है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।

****